Digitized by eGangotri

रमलसार

رمل سار

प्रश्नावली

जिस में

काष्ठ के पाँसे के द्वारा शुभाशुभ प्रश्न विचार

रचित हैं

सर्व विद्यानुरागियों और अभिलाषियों

के निमित्त शुद्धता पूर्व्वक

चौथी बार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा ॥

अप्रेल

सन [illegible] ईस्वी

Bahsha
No:

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अप्रैल सन् १८८१ ई० पर्यन्त जो पुस्तकें बेचनेके लिये तय्यार हैं वह इस फ़िहरिस्त में लिखी हे और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा हे परन्तु ब्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
क़िस्सा वग़ैरह	रामिस्तन का इतिहास	मथुरा सभा
नानार्थ नौ संग्रहावली	संस्कृत की पुस्तकें	ज्योतिष संस्कृत
ब्रह्मसार	लघुकौमुदी	मुहूर्त गणपति
शिवसिंह सरोज	सिद्धान्त चन्द्रिका	मुहूर्त चक्र दीपिका
भक्तमाल	अमरकोष तीनों काण्ड	मुहूर्त चिन्तामणि सटी·
इन्द्रसभा	सटीक	मुहूर्त मार्त्तण्ड सटीक
विक्रम विलास	पञ्च महायज्ञ	मुहूर्त दीपक
बैताल पचीसी	निर्णयसिन्धु	बृहज्जातक सटीक
सिंहासन बत्तीसी	संग्रह शिरोमणि	जातकालंकार सटीक
पद्मावती खण्ड	भगवद्गीता सटीक	जातकाभरण
शुक बहत्तरी	दुर्गा पाठ सटीक बन्द:	होरा मकरन्द
चहार दरवेश	विष्णु भागवत	जातक चन्द्रिका
क़िस्सा हातमताई	भविष्योत्तर पुराण	जातकालंकार
अपूर्व्व कथा	अपराध भंजन स्तोत्र	दैवज्ञ भरण
क़िस्सा गुलसनोबर	कायस्थ धर्म निरूपण	ज्ञान स्वरोदय
सहस्र रजनी चरित्र	तथा छोटा	इन्द्रजाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भूमिका

इस रमल सार प्रश्नावली के देखने की यह रीति है कि एक पासा काठ का बनवा ले और उसमें संख्या के एक से लेकर चार तक अंक लिख १,२,३,४, और पहिले प्रश्न पूछनेवाला अपने मन में विचार ले जिस मनोरथ के लिये डाले तब तीन बार पासे को फेंके जब उसमें जो अंक तीन बार में पड़ें उन अंकों को क्रम से जोड़ ले जैसा प्रश्न का उत्तर आवे उसको समझ ले ॥ इति ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ रमलसार प्रश्नावली

१११ अहो पूछनहार पुरुष शकुन उत्तम है तुम्हारा कार्य्य सिद्ध होगा सब कामना सिद्ध होगी और इस ग्राम में ही अर्थ पावेगा और तुमको व्योपार में लाभ होगा यही चित्त में चढ़ेगा परंतु श्री गुरुदेव की पूजा करना अवश्य कार्य्य होगा ॥ ११२॥ मध्यम इस काम के करने में लाभ नहीं और चिन्ता बहुत होगी मत करना जो सपने में अशुभ देखा तो व्योपार में लाभ न होगा इस काम को छोड़ और कुछ करना ॥.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

११३ उन्नम तुमको ठिकाना अच्छा मिलेगा और चिन्ता दूर होगी विघ्न मिटेगा सुख होगा और कल्याण मंगल होगा और बड़ाई सुनोगे जो गवन करोगे तो सिद्ध होगा ये काम अवश्य करना चाहिये॥ ११४ उन्नम तुमको लाभ होगा और कुल की वृद्धि होगी सुख सम्पत्ति मिलेगी और मित्र से लाभ होगा कुलदेव की पूजा करना ॥१२१॥ मध्यम पहिले तो तुमको लाभ है पीछे जहां गवन करोगे तहां मनमान पावोगे पीछे तुमको कोई चिन्ता होगी भाई बंधु की और ते इस से श्री शनिश्चर की पूजा करना जिस से तुम्हारी चिन्ता सब दूर हो जायगी ॥१२२॥ उन्नम तुम्हारे घर में लाभ होगा इष्ट के योग से पावोगे और एक महीना के आदि अन्त में तुमको कल्याण प्राप्त होगा और मनो कामना फलेगी श्री भगवान की पूजा करना ॥१२३॥ उन्नम इस काम के करने में तुमको सब काम की सिद्धि होगी कुटुम्ब की वृद्धि और स्त्री और धन लाभ होगा इस बात में सन्देह नहीं अवश्य तुमको चिन्ता धन की है सो कुछ काल में मिट जायगी १२४ उन्नम तुम धन संतान पावोगे जो कोई वस्तु भली या बुरी मिले तो लेना मन में कुछ चिंता मत करना और व्योपार में तुमको अति लाभ है शनिश्चर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देवता की पूजा अवश्य करना चिन्ता सब दूर हो जायगी ॥२३१॥ उत्तम सब बात भली होगी ॥ और राज्य का काम मिलेगा और पुत्र अर्थात् धनस्थान पावोगे जो कोई वस्तु गई होगी सो मिलेगी श्री परमेश्वर जी का पूजन करना सब कामना सुफल होगी शकुन उत्तम है ॥२३२॥ उत्तम तुमने चित्त में जो कार्य्य सोचा है सो मनका मनोरथ फलेगा और बहुत हर्ष होगा मन की चिन्ता सब दूर होगी श्री भगवान की पूजा करना लाभ होगा ॥२३३॥ मध्यम धन की हानि होगी अथवा व्योपार करे तामें लाभ न मिले इस कामको मत करना तुमको अशुभ होगा सोमवार के दिन श्री महादेव जी की पूजा करना और इस काम को छोड़ कुछ और काम करना ॥ ✻ ॥

२३४ उत्तम तुमको घर में लाभ अथवा बड़ाई होगी और जय होगी और राज्य द्वार के द्वार से लेना हो और पूर्व दिशा में लेना है मन वांछित फल मिलेगा धीरज धर श्री कुलदेवी की पूजा करो जिससे तुम को लाभ होगा ॥२४१॥ उत्तम तुमको व्योपार में लाभ है और कपड़े के व्योपार में अति लाभ होगा और व्योपार में ही तुमको लेना है और सब दुख दर्द तुम्हारा दूर होगा और मंगलीक वस्त्र मिलेगा अथवा साल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दिन पीछे तुमको अवश्य लाभ होगा ॥२४२॥ उत्तम तुम्हारा भाई बन्धु मित्रों से मिलाप होगा और चिन्ता मिटेगी वस्तु हाथ आवेगी और राजा के घर से लाभ होगा और सकल कामना फलेगी ॥२४३॥ उत्तम । तुम्हारी मनो कामना सिद्ध होगी और धन धान्य की तुम को चिन्ता है सो इसका फल मिलेगा और चिंता दूर होगी कल्याण और पुत्र का लाभ पावोगे और परदेश के ग्राम में से मिलेगी जो तुम्हें स्वप्न में ग्राम जाना मालूम हो तो अति उत्तम है ॥२४४॥ उत्तम तुम्हारी सकल कामना सिद्ध होगी और धन धान्य । की तुमको चिंता है उसका फल मिलेगा और स्वप्न में देवी जी के दर्शन हो तो शुभ है इस बात से सन्देह मत करना ॥२२१॥ उत्तम तुम को फल लाभ दायक है और कुछ धर्म करना जिस्से तुम्हारी सब चिन्ता । दूर होगी और धन धान्य सुख मिलेगा अरु स्वप्न में अच्छी बात देखो तो बुरी अरु फूल न माला अति उत्तम सुखदाई है ॥२१२॥ उत्तम तुम को अर्थ सिद्ध और कुल में [illegible] होगी और मनोर्थ सिद्ध होगा जो तुम्हारे चित्त में परदेश जाने की है तो सिद्ध करो काम न [illegible] सब फलेगी ॥२१३॥ मध्यम तुम्हारे मन में स्त्री अथवा धन की चिन्ता है सोलह मास के आदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अन्त में फल मिलेगा और भाई बन्धु से मिलाप होगा और माता पिता से पूछकर काम करना और कुल देवता का ध्यान ब्राह्मण भोजन कराना ॥ २१४ ॥ उत्तम तुम्हारा कल्याण होगा और गई वस्तु मिलेगी तुम चिन्ता मत करो तुमको धन धान्य की चिन्ता है सब चिन्ता दूर होगी और लाभ होगा परंतु शनिश्चर जी की पूजा करनी उत्तम है ॥ २२१ ॥ उत्तम तुम को तीन वर्ष से चिन्ता अर्थात दुःख का क्लेश है सो दूर होगा और लाभ होगी तुम चिन्ता मत करो शकुन उत्तम है २२२ मध्यम तुम्हारे घर में विरोध रहता है और स्त्री से प्रीति कम है और मित्र सो बोल चाल नहीं है जिस से तुम को क्लेश है सो श्री भगवान और माता पिता की सेवा करना शकुन मध्यम है ॥ २२३ ॥ मध्यम तुम को चिन्ता है और आपका माल पराये हाथ में पड़ा है क्योंकि जिस काम को करते हो उसमें लाभ नहीं होता है और घर में क्लेश रहता है सो कुछ दिन में लाभ दायक होगा ॥ २२४ ॥ मध्यम तुम को पराये घर की फिकर है जिससे चिन्ता बहुत है तुम को घर में क्लेश हैं सो श्री परमेश्वर और नवग्रहों की पूजा करना सब दुख दूर हो जायगा शकुन अच्छा नहीं है ॥ २३२ ॥ उत्तम तुम्हारे घर में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सुख और लाभ होगा एक महीना के आदि अन्त में फल मिलेगा परन्तु स्वप्न में सूखा वृक्ष अथवा सूनो नगर देखो तो बहुत बुरा है ॥२३२॥ मध्यम तुम इस काम को मत करना डर है सुख न मिलेगा तुम्हारे घर में विरोध है और व्योपार में तुम को लाभ नहीं है तुम को घर मीठा है तासे तुम श्री सत्य नारायण जी की पूजा करना लाभ होगा ॥२३३॥ मध्यम इस काम के करने से तुम को चिन्ता होगी यह काम देर से होगा कुछ और काम करना चिन्ता सब मिट जायगी अपने कुलदेव की पूजा करना इस में कल्याण लाभ होगा ॥२३४॥ सामान्य है तुम्हारे घर में विरोध रहता है और कुटुम्ब में एका नहीं है तुम को चिन्ता है सो डरो मत सब दुःख दूर हो जायगा परन्तु पीपल की पूजा करना बहुत सुख मिलेगा २४१ उत्तम तुम्हारे घर में सुख होगा और सब कामना सिद्ध होगी जो तुम्हारे चित्त में है सो फल मिलेगा कुछ उपाय करो तुम को लाभ होगा ॥२४२॥ मध्यम तुम को घर मीठा है सो तुम सावधान रहो सर्व लाभ कारी है और व्योपार में तुम को लाभ है परन्तु सूर्य्य व्रत धारण करो तिस से तेरे शरीर को सुख मिलेगा ॥२४३॥ उत्तम तुम को व्योपार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में लाभ होगा और मन का सन्देह दूर होगा और सुख लाभ होगा घर में आनन्द लाभ होगा परंतु कुछ धर्म विचारो इस से सर्व कामना सिद्ध होगी ॥ ३१० ॥ उत्तम तुम को सुख लाभ है और चिन्ता सब दूर होगी कल्याण मिलेगा तुम्हारे कई तिल अथवा मस्सा हैं जिस से तुम को कल्याण लाभ होगा उत्तम है ॥ ३११ ॥ उत्तम तुम को अच्छे स्थान से लाभ होगा और चिन्ता सब दूर होगी और माता पिता की सेवा करो और कुलदेव की पूजा अर्थात ब्राह्मण भोजन कराना मनो कामना पूर्ण होगी ३१२ उत्तम तुम्हारी मनो कामना सुफल होगी और धन धान्य की लाभ अर्थात कुटुम्ब में वृद्धि होगी जो स्वप्न में गज अश्व देखो तो मंगलीक भला है ॥ ३१३ ॥ सामान्य तुम को धन की इच्छा है परन्तु तुम्हारे वैरी बहुत हैं तासे चिन्ता अधिक रहती है तुम्हारी चिन्ता सब दूर होगी परन्तु श्री भगवान की पूजा करो बहुत लाभ होगा शकुन सामान्य है ॥ ३१४ ॥ उत्तम तुम्हारा कल्याण होगा और कुछ धर्म करो बहुत लाभकारी है और चिन्ता मत करना कामना सिद्ध होगी और अर्थ प्राप्त होगा श्री गणेश जी का पूजन करना शकुन उत्तम है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

३२१ मध्यम तुम्हारे घर में लाभ होगा और व्योपार में तुम को सुख होगा और मार्ग में तुम को चोर लगेंगे जिस का डर बहुत होता है एक मास के आदि अन्त में तुम को लाभ होगा और तुम अपने घर में बैठ रहो व्योपार में उपाय करो तो अति लाभ है ॥ ३२२॥ मध्यम धन का नाश होगा और मन को बहुत चिन्ता उपजेगी और अर्थ न पावोगे इस काम के करने से लाभ नहीं होगी तुम धीर्य्य धरना शकुन मध्यम है ॥ ३२३॥ उत्तम तुम को अर्थलाभ सौभाग्य मिलेगा और तुम्हारे वैरी का नाश होगा और धन धान्य की वृद्धि होगी और इष्ट मित्र से लाभ होगी और तुम्हारा दुख नाश होगा परन्तु तुम श्री सत्यनारायण की पूजन करना शकुन तुम को सामान्य है ॥ ३२४॥ उत्तम तुम को खेती में अर्थात व्योपार में बहुत लाभ होगा और मनोकामना पूरी होगी और धन सुख मिलेगा और तुम को मार्ग में भय होगा और चिन्ता दूर होगी परन्तु हनोमान जी का पूजन करना शुभ है ॥ ३३१॥ जो तुम्हारे मन में चिन्ता है सो सब दूर होगी और लक्ष्मी की प्रीति होगी और कुटुम्ब में वृद्धि होगी और तुम्हारा कार्य्य सिद्ध होगा यह शकुन श्रेष्ठ है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

३३२ उत्तम तुम्हारे मन का मनोरथ सिद्ध होगा और शीघ्र ही फलेगा कुछ चिन्ता मत करो और तुम्हारे माता पिता तथा भाई बन्धु इष्ट मित्र से अति वृद्धि होगी और तुम्हारा कल्याण होगा कुछ सुराव। विचार शकुन आनन्द के लायक है ॥ ३३३॥ उत्तम तुम को घरके काममें शुभ होगा और आप की सब चिन्ता मिटेगी और भाई बंधु मित्र से मिलाप होगा और सब चिन्ता अर्थात् दुख नाश होगा और आपके घरमें कल्याण लाभ होगा यह शकुन उत्तम है ॥ ३३४॥ उत्तम तुम को व्यापार में लाभ होगा और सब दुख दूर होगा परंतु श्री परमात्मा। का पूजन करना और कुछ धर्म में मन लगावो तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा यह शकुन उत्तम है ॥

३४१ तुम्हारा सब कार्य्य मनका चीता सिद्ध होगा और चिन्ता सब दूर होगी कुछ सोच मत करना। तुम धीर्य धरो मन बांछित फल प्राप्त होगा और सबसे प्रीति लाभ होगी कुटुम्ब में अति सुख होगा यह शकुन उत्तम है ॥ ३४२॥ उत्तम प्रथम तुम्हारे घर में प्रीति बढ़ेगी और तुम को अति लाभ होगी हिम्मत कर मनो कामना तुम्हारी फलेगी। परंतु श्री भगवान की सेवा करना शकुन तुम्हारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अति श्रेष्ठ उत्तम है ॥ ४४३ ॥ मध्यम तुम को वैरी बहुत लागे रहते हैं सावधान रहना चाहिये और तुम को चिन्ता बहुत होगी और चिन्ता में तुम बहुत घबड़ाना मत जो काम तुमने विचारा है सो न बनेगा इस काम में तुम्हें लाभ नहीं है शकुन सामान्य है ॥ ४४४ ॥ उत्तम इस काम के करने से तुम को बहुत लाभ होगा और मित्र बन्धु से मिलाप होगा तुम को सुख मिलेगा यह शकुन लाभ दायक है ॥ ४२१ ॥ उत्तम तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा और चिंता से खेद है सो तुम को धन धान्य की लाभ है श्री परमेश्वर का पूजन करना शकुन उत्तम है ॥ ४२२ ॥ तुम को चिन्ता है सो कुछ दिन में मिट जायगी और तुम्हारी वस्तु दूसरे के हाथ में है सो धीर्य्य धरना मिलेगी शकुन सामान्य है ॥ ४२३ तेरी चिन्ता मिटेगी हिम्मत कठिन है धन उपार्जन अर्थात् व्योपार कर सब चिन्ता मिटेगी और कुछ पुराय विचार शकुन उत्तम है ॥ ४२४ ॥ उत्तम तुम को कुछ चिन्ता है सो एक मास के आदि अन्त में दूर होगी व्योपार में सुख लाभ मनोर्थ फलेगा परंतु श्री सत्यनारायण का पूजन करना शकुन भलो है ॥ ४२५ ॥ तुम्हारे मन में परदेश जाने को है सो जाना मनोर्थ सिद्ध होगा परंतु श्री कुलदेव की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पूजा करना शकुन उत्तम है ॥४२८॥ मध्यम तुम्हारे मनमें चिन्ता है जो कार्य्य करो तो विचार के करना और कुछ हानि हुई है सो कुछ दिन पीछे लाभ होगी परंतु श्रीसत्तनारायण का पूजन करना सब चिन्ता रोग तुम्हारा दूर होगा शकुन अच्छा नहीं है ॥४२९॥ उत्तम तुम को घर में लाभ होगा और वैरी का नाश होगा और सुख सम्पत्ति मिलेगी और कुटुम्ब में फल पुत्र का लाभ होगा परंतु एक दीपक देवता के मंदिर में जगाओ शकुन तुम को उत्तम है ॥४३०॥ आपके घर में चिंता अर्थात् रोग बने हैं सो दिन दश में सब दूर होगा और तुम को फल मिलेगा और मनो कामना सिद्ध होगी शकुन उत्तम है ॥४३१॥ उत्तम तुम को लाभ होगी और शरीर की चिन्ता रोग सब दूर होगा और कोई स्थान की प्राप्ति होगी और मनोर्थ सब सिद्ध होंगे अर्थात् कहीं जाओ तहां कुशल से आवोगे उत्तम है ॥४३२॥ उत्तम तुम को लाभ है और चिन्ता सब दूर होगी और धन धान्य की लाभ सुख होगा परदेश जाओगे तो सन्मान पावोगे और शकुन उत्तम है ॥४३३॥ तुम्हारे मन में चिन्ता है सो काम मत करना तुम को सुख होगा धैर्य धरो और पुण्य करो तो नारायण की कृपा होगी शकुन मध्यम है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

४३४ तुम्हारे शरीर में क्लेश है अथवा भाई बन्धु से अनमिल रहते हो और जो मन में काम विचारा है सो होगा और सर्व कामना पूरी होगी शकुन उत्तम है॥ ४४१ तुम को फल प्राप्त होगा और कोई उपाय कर डरो मत बड़ा लाभ होगा जो तुमने विचारा है सो मनोर्थ सिद्ध होगा शकुन उत्तम है ॥४४२॥ इस काम के करने से तुम को सुख न मिलेगा और चिन्ता बहुत है और राज्य का डर है परन्तु इस में लाभ है सो श्री शिव जी के मन्दिर में एक दीपक का प्रकाश कर शकुन तुमको मध्यम है ॥४४३॥ यह काम अशुभ है और इस में चिन्ता होगी और काम बिगाड़ होगा सो जो तुम नवग्रह पूजा अथवा धर्म करो तो कल्याण लाभ होगा यह शकुन मध्यम है ॥४४४॥ तुमको व्योपार में लाभ होगा और मन में कुछ चिन्ता होगी अर्थात खेद पावोगे कुछ दिन पीछे तुम को सुखदाई फल मिलेगा और सकल कामना सिद्ध होगी परन्तु श्री राम नाम की गोली बनाकर जल में डालो अथवा जीवों को चुगावो तो महा सुखदाई फल मिलेगा यह शकुन तुमको महा श्रेष्ठ है ॥

इति

6598

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
संस्कृत उर्दू टी॰ स॰	रामायण रामबिलास	योग वाशिष्ट
मनुस्मृति	रामायण तुलसी कृत	आनन्दाऽमृत वर्षि-
विष्णुहारीत	रामायण सटीक मय	णी
महिम्न स्तोत्र	मानस दीपिका कोष	**काव्य**
संस्कृत भाषा टी॰	आरि तथा जिल्द बंधी	सूरसागर
अमरकोष	तथा मोटे अक्षरों की	कथासागर
याज्ञवल्क्य स्मृति	मय तसवीर व क्षेपक	विश्राम सागर
सन्ध्या पद्धति	रामायण तुलसी कृत	प्रेमसागर
व्रतार्क	सातों काण्ड	व्रजबिलास बड़ा व
भगवद्गीता टी॰ ह॰ कृ॰	रामायण शब्दार्थ कोष	छोटा
भगवद्गीता श्रा॰ गि॰	रामायण का इतिहास	कथाप्रिया
गीत गोविन्द	रामायण मानस दी॰	विजय मुक्तावली
कथा सत्यनारायण	रामायण कवितावली	अनेकार्थ
परमार्थसार	रामायण गीतावली	छन्दोर्णव पिङ्गल
शार्ङ्गधर संहिता	रामायण गीतावली स॰	कविकुल कल्पतरु
पाराशरी सटीक	विनयपत्रिका वा॰ मो॰	रसराज
शीघ्रबोध सटीक	विनयपत्रिका वा॰ शि॰	सतसई मूल तथा स॰
लघुजातक	**नाटक**	सभा बिलास
षट् पञ्चाशिका	प्रबोध चन्द्रोदय	तुलसी शब्दार्थ
सामुद्रिक	रामाभिषेक	भजनावली
भाषा (इतिहास)	आनन्द रघुनन्दन	प्रेमरत्न
महाभारत भाषा छन्द	**वेदान्त**	युगलबिलास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
चित्र चन्द्रिका	मुतफ़र्कात	कल्पभाष्य
बारहमासा बलदेवकृत	शनिश्चर की कथा	हरसी
मनोहर लहरी	ज्ञानमाला	अक्षरावली
गंगा लहरी	गोपीचन्द भरतरी	स्वयम्बोध
यमुना लहरी	कथा श्री गंगा जी	ज्ञान चालीसी
जगद् विनोद	अवध यात्रा	दोहावली तुलसीदास
प्रताप विनोद	भरतरी गीत	बालाबोध
गर्ग संहिता	दानलीला व नाग-	विद्यार्थी की प्रथम
भजनमाला	लीला	पुस्तक
राग	दोहावली रत्नावली	गणित कामधेनु
राग प्रकाश	गोकर्ण माहात्म्य	लीलावती
राग संग्रह	श्री गोपाल सहस्रनाम	पटवारियों की पुस्तक
लावनी	कथा सत्यनारायण	४ भाग
हरिनामरत्नावली	सटीक	स्त्री दर्पण
शृंगार बत्तीसी	हनुमान बाहुक	सती बिलास
वैद्यक भाषा	जनक पचीसी	सीता बनवास
निघण्ट	हरिहर सगुण निर्गुन	सौदागर लीला
अमर विनोद	पद्मावली	मनमोहन चरित्र
वैद्य जीवन	बनयात्रा	तुलसी तत्त्व भास्कर
औषधि संग्रह कल्प	कायस्थ वर्ण निर्णय	कायस्थ कुल भास्कर
वर्द्धी	सत्यनाम	इति
अमृतसागर बड़ावबोध	विहार विन्द्राबन	
वैद्य मनोत्सव	समर विहार विन्द्राबन	

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE